ब्रज-यात्रा विवरण

बीकानेरी भाषा

सं० १७१३

अन्नकूट महोत्सव, जतीपुरा

सं० १७१३ की ब्रज-यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण विवरण

श्री गोवरधन नाथ जी रै दुवारे इये[2] जिनस श्री ठांकुरां री आरती दरसण हुवे छै, ने इये जिनस भोग लागे छै।

१. परभात मंगला आरती हुवे, ताहरा मांखण ऽ॥, बूरो से० ५ आरोगे।

सं० १७१३ आसोज सुद १३ परभात सुदरसण कीयो।

२. संगार दन[3] घड़ी चार चढ़िया हुवै, दरसण हुवै, आरती ने न ई ने श्री ठाकुर मेवो पकवान चारोली भोग लागे। मेवो ऽ॥ हेक।

---

१. 'गोवर्धन जी' से लेखक का अभिप्राय भगवान् श्री नाथ जी से है। २. ये। ३. दिन।

३. गोपीबल्लभ भोग लागे, पकवान मठड़ी पूड़ी आरोगै। दरसण नं हुवै। श्री ठाकुरां नुं पकवान झाबा[1] ; २ झाझा[2] भोग लागै।

४. गुवाल रो दरसण हुवै, ने श्री ठाकुर घिरत दूध झुग झुगो आरोगे।

५. राज भोग आरती हुवै, श्री ठाकुरां नुं सरब भोजन, छत्तीस भोजन, सगला पकवान खटरस, तीवणं[3], खीर, सिखरण, तरकारी अथांणा, घंणा मिष्ठान पकवान भोग लगै।

६. संख नाद उत्थापन दरसण हुवै, श्री ठाकुर मिठाई, लाडूवा, पकवान, मिठड़ी, सकरपारा आरोगे, से ऽ॥ रे टांणे, झाझा।

७. भोग सरीरो दरसण हुवै। श्री ठाकुर दुध, मिस्त्री, बूरो आरोगे।

८. संझ्या आरती हुवै। श्री ठाकुर दूध पकवान सिखरी आरोगे।

९. गुवाल दरसण नं ई। श्री ठाकुर पकवांन आरोगे।

१०. सेन[4] आरती हुवै। दरसण सीयाते[5] हुवै छै ने उन्हाले[6] नहीं हुव तों। श्री ठाकुर दूध भात खीर आरोगे।

इये जिंनस श्री ठाकुरां नुं दस बखत भोग लागे छै। ने दरसण बखत आठ[7] (८) हुवै छै। आरती ४ हुवै, १ मंगला, १ राज भोग, १ संध्या, १ सेन। पछै श्री ठाकुर पौढ़े-ताहरा ठोडा ४ ढ़ोलिया बिछाड़ी जै, पाथरी[8] जे, पाणी जल री झारी भर राखी जे छै। श्री नाथ जी रे गांया हजार ३ त (था) ३॥ छै, भैंस्यां सत ५ हेक[9] छै। रोजांनो खर्च रुपया ४०) हेक रो छै।

श्री नाथ परकमा – श्री नाथ जी री परकमा श्री गोवरधन परबत दोली बड़ी परकमा कोस ८ (आठ) तथा ९ (नव) री छै परकमा माहै इतरा[10] तीरथ कुण्ड छै। इतरा श्री ठाकुरां रा दरसण छै।

१. श्री महादेव जी रंगेस्वर गोरा पारबती संमेत। मूरत द्रिव्य छै। श्री गोवर्धन पर्वत उपर। श्री नाथ जी रे मन्दिर रे डावे[11] पासे देहरो छै। अद्भुत मुरत छै। परकमा मांहे।

१. श्रीदाणांराय जी रो देहरो जठे[12] ठाकुरां गोरस रो दाणं लियो छै, तठै छतड़ी २ छै। घाटी छै ऊपर देहरो।

२. मांनसी—गंगा स्नान कीजे, ने ब्रिहम कुण्ड स्नान कीजे। ऊपर ठाकुर दुवारा ३ छै ताहरा दरसंण।

१. श्री हरिदेव जी रो आद[13] मूरत। अदभूत श्री नाथ जी सरीखो[14] छै। देहरो बड़ो छै। कछवाहा रो करायो।

२. मांणसी-गंगा ब्रह्म कुण्ड ऊपर।

(१) श्री केसोराय जी रो देहरो।

---

१. बढ़िया। २. भरपूर बढ़िया। ३. शाक। ४. रायन। ५. शीतकाल। ६. ग्रीष्म-काल। ७. भोग को छोड़कर। ८. बिछाना। ९. अनुमान। १०. इतने। ११. बांयाँ। १२. जहाँ। १३. प्राचीन, आदि रूप। १४. समान।

(२) श्री रसकनाथ जी रो देहरो।

राधाकुण्ड, किसन कुण्ड २ बड़ा कुण्ड छै। बड़ी मेहमा छै। उठे सनान कीजे छै। उपर श्री राधाकिसन जी रो देहरो छै, दरसण कीजे, उपर कुंज घणा छै। बड़ी मेहमा कुण्डा री। काती बदी ६ री छै। काती वद ६ आदमी लाखां बन्ध जात आवे छै।

श्री बलदेव जी रो देहरो ने संकरसण कुण्ड सनान कीजै ऊपर श्री महादेव जी रो पण[1] देहरो छै। श्री गोवद देव जी रो देहरो, श्री ठाकुरों रो दरसण ने गोवद कुण्ड सनान कीजे। अजायब ठौड़ छै। सोनो मण इठे दान कीजे। अपछर कुण्ड सनान कीजै।

१. सुरही-कुण्ड सनान कीजे।

इन्द्र रो गरभ गालियो[2] पछे, इन्द्र श्री ठाकुरो कंने[3] आयो, उवा ठौर अद्‌भुत छै। इतरा अहेनाण[4] सांबता[5] छै।

श्री ठाकुर जिके[6] सिला ऊपर बैठा हुंता, सु[7] सिला श्री ठाकुरां रो चरण १ बरस ७ तथा ८ (आठ) रे बालक हुवे, तिसड़ो[8]।

इन्द्र री खड़ावे[9] रो पग, हेके पग तणे अस्तुत[10] कीवी छै।

इन्द्र रे हाथी ऐरावत रा पग २।

कामधेनु गाय रा खुर २।

सुंदुर सिला,[11] जठे[12] गोपीयो रे संगार नुं संदुर जो इजे[13] पछै सिला म्हा[14] पैदा कियो। सुं सिला म्हा संदुर रो रंग नीसरे[15] छै।

गोरधन पूजा वल इन्द्र नुं दीज[16] तो सुं श्री ठाकुरां लीयो।

इये जिनस परवत दोली[17] परकंमा, ते मांहे अे तीरथ दरसण छै।

मथुरा—श्री मथुरा मांहे इतरा ठोड़ा तो अद्‌भुत छै।

१ श्री जमना जी घाट सनानकर भद्र[18] हुई जे। बीच बिसरायत घाट छै ने पसवाड़े २ घाट, २४ बीजा छै। बीच मदनायक बिसरायत घाट छै। कंस मारनै श्री ठाकुरां बिसराम लीयो ते बिसरायत कहाणी[19]। बीजाई[20] घाटा २४ रा ही नाम छै पण सिरो बिसराय[21]।

१. श्री ठाकुर दुवारा सं० १७१३ आसोज सुद १५ दरसण कीयो।

१. श्री केसोराय जी रो बड़ो दुवारो अद्‌भुत छै। बीच ! ठाकुर श्री मथरामल जी छै। जीवणे[22] पासे श्री केसोराय जी छै, डावे[23] पासे श्री कल्याण राज जी छै। पण[24] देहरो केसोराय जी रो कहावे। पाइदीये राजा वरसंगदे रो।

२. श्री रुघनाथ जी ठोडै[25] २ दुवारा छै। सिखर बध छै।

---

१. भी। २. गला। ३. पास। ४. चिह्न। ५. साबत, पूरे रूप में विद्यमान। ६. जिस। ७. वही। ८. वैसा। ९. खड़ाऊ। १०. स्तुति। ११. सिन्दूर। १२. जहां। १३. देखना। १४. में। १५. निकलता है। १६. नहीं दी। १७. चारों ओर। १८. सिर-मुंडन। १९. कहा गया। २०. अन्य भी। २१. भूल गया। २२. दाहिनी ओर। २३ बाँयी। २४. पर। २५. स्थान पर।

१ मंदिर छै। बोहत अद्‌भुत श्री ठाकुर बिराजे छै।
१ नरसंघ जी दुवारो बोहत अद्‌भुत मूरत छै।
१ श्री ठाकर, देवकी, वसदेव, जसोदानन्द, री पाड़ से ५ सरब छै।
१ श्री सांवलो जो।
१ बीजा मंदर ठोड़ा १० हेक तो श्री ठाकुरा रा दरसण कीया।

× × ×

१ श्री महादेव जी भूतेस्वर अद्‌भुत देहरो छे ने दरसण छै।
१ श्री महादेव जी भवानीसंकर अद्‌भुत छै।
१ श्री महादेव जी गोकरनेस अद्‌भुत मूरत दिव[1] छै।
इछना[2] रो पुंरणहार, किसन गंगा उपर देहरो छै।
१ बीजा ही महादेव जी ठोडा ५ तथा ७ दरसंण कीया।
१ देवी जी महा विद्या विद्याधरी बड़ी मेहमा छै।
इये जंनस[3] श्री मथरा जी री मेहमा, दरसण छै संखेप सा मांडीया[4] छै।

× × ×

१ अकरूर घाट संनान कीजै।
१ श्री गोपीनाथ जी रो दुवारो, अकरुर घाट उपर मुद्दते मदसुदन जी रो करायो श्री ठाकर अद्‌भुत मुरत छै।

× × ×

तीरथ गुर श्री मथरा जी माहे पूज्य गोपाल जी कचरेजी रा छोरु, दुवारो चोबे हरचन्द जे वृन्द रो छै।

वृन्दावन—श्री वृन्दावन तीरथ ढोडांरी मेहमा।
१ श्रीं कालिन्द्री संनान जठे कालो नाग नाथीयो[5] तठै।
१ चीर घाट संनान।
१ केसी घाट सनान।
१ ब्रिह्मन कुण्ड संनान।

इतरा[6] श्री ठाकुरां रा दरसण कीया।

१ श्री मदन मोहन जी	१ श्री गोवंद देव जी
१ ,, राधा वलभ जी	१ ,, बांको बिहारी जी
१ ,, गोपी नाथ जी	१ ,, जोड़ी ठाकुर जी
१ ,, राधा माधव जी	१ ,, किसोर किसोरी जी
१ ,, राधा किसन जी	१ ,, व्यास जी रा ठाकुर जी
१ ,, राधा रमण जी	१ ,, नरसिंघजी
१ ,, राधा मोहन जी	१ ,, रसक रसीलो जी

---

१. दिव्य। २. इच्छा। ३. वस्तुएँ। ४. लिखा गया। ५. नाथ डाल के दमन किया। ६. इतने।

१ श्री गोपी बल्लभ जी
१ ,, चिकंनिया ठाकुर
१ ,, गोपी बल्लभ जी
१ ,, रसक नाथ जी
१ ,, काली मरदन जी
१ ,, महादेव जी गोपेश्वर
१ ,, वन्द्रा देवी
१ श्री चकोर चकोरी जी
१ ,, मुरली मनोहर जी
१ ,, चीर बिहारी जी
१ ,, कुंज बिहारी जी
१ ,, वन्द्रावन चन्द जी
१ ,, जुगल किसोर जी

१. वंशीवट श्री गोपेश्वर महादेव कनै, १. श्री ठाकुरं रा दरसण ५ तथा कुंजा माहे फिरिया दरसण किया। ७ बीजाई[1] कीया। सुं नाम चीत[2] नावै। बड़ी ठौड़ छै श्री ठाकुरां रो नित-बासो[3] उठे[4] छै होज।

× × ×

गोकुल जी—श्री गोकुल जी ठोड़ा मेहमा।
१ जसोदा घाट संनान।
१ ठकुराणी घाट संनान।

गोकुल—श्री गोकल जी परे कोसे ४ हेके श्री देवी जी रा देहरा।
१ बंद्री देवी जी।
१ आणंदी देवी जी।

श्री गुसाईं जी रे श्री ठाकुर दुवारा दरसण कीया—
१ श्री नवनीत राय जी
१ श्री गोकल चन्द जी
१ श्री गोकल नाथ जी
१ श्री मथरा नाथ जी
१ श्री दुवारका नाथ जी
१ श्री कल्याण राय जी

श्री गंगा जी सोरम घाट तीरथ सं० १७१३ काती बदी ८ पोहता। तीरथ गुरु प्रा० वंनमाली जग नाथांणी छै। पूज्य गोपाल जी नर संघ सं० १६८५ गया हुंता[5], तद[6] कीयो थो। पछे[7] चि० हर जी ई सं० १७०२ गया हुंता।

श्री गंगा जी सोरम घाट मेहमा[8] अथक है।
१ चक्रघाट संनान नित हुवै। उठे[9] भद्र[10] हुई जे उवे[11] ठोड़ी।

× × ×

बीजा घाट ११ छै, मेहमा उवाई[12] घाटा रा छै संनान री।
१ सूरज घाट
१ कुडल घाट
१
१ रणमोचन घाट
१ पापमोचन घाट
१ कुडल बीजोई। उठे संनान कीजै।
१ रूप घाट।
१ गऊ घाट उठे अस्त[13] पड़वाई जै
१ ब्रह्म घाट
१ भैरुव झाफ घाट
१ भगीरथी री पीपली—कोस १॥ हेके छै।
१ बुठ गंगा भागीरथ री पीपली कहे छै।

---

१. अन्य भी। २. स्मरण नहीं हो रहा है। ३. नित्य रहना। ४. वहाँ। ५. थे। ६. तब। ७. पीछे। ८. महिमा। ९. वहाँ। १०. शिर मुंडन। ११. उसी स्थान। १२. कही। १३. प्रक्षेपन।